

संचार ब्रीफ्स

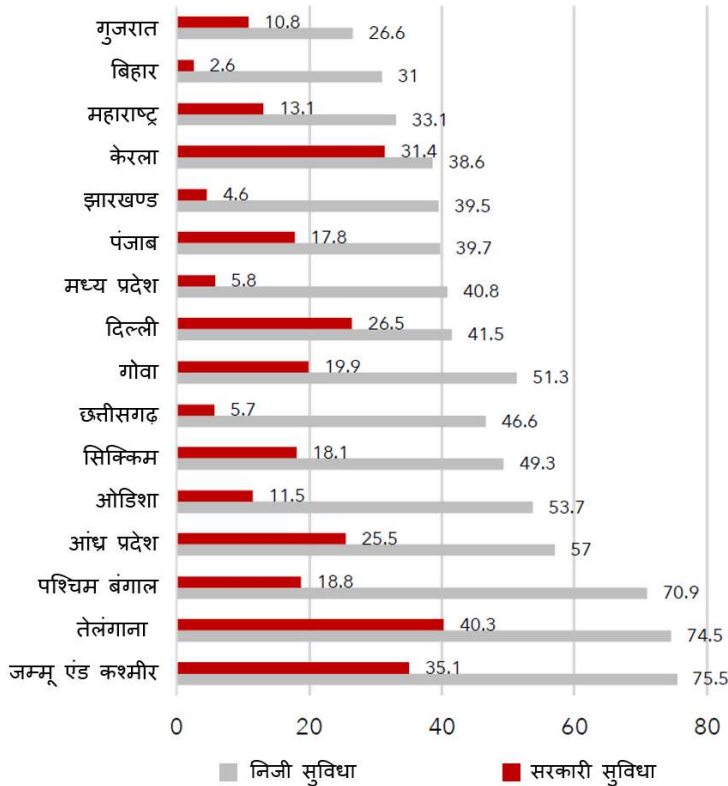
विज्ञान और समाचार: स्वास्थ्य व अनुसंधान संचार

ब्रीफ #9: ऑपरेशन (सीजेरियन सेक्शन) से प्रसव

सीजेरियन सेक्शन प्रसव के लिए किया जाने वाला ऑपरेशन या सर्जरी है। आम तौर पर इसका सहारा अत्यधिक रक्तचाप, जुड़वां भ्रूण, नाल या गर्भ नाल से जुड़ी समस्या आदि गंभीर जटिलता वाले मामलों में इनकी वजह से सामान्य प्रसव के दौरान होने वाली जच्चा और बच्चे की मृत्यु की आशंका को कम करने के लिए किया जाता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) कहता है कि प्रसव के लिए ऑपरेशन सिर्फ तभी किया जाना चाहिए, जब चिकित्सकीय रूप से यह अनिवार्य हो। क्योंकि यह एक सर्जरी है और इसके तात्कालिक और दीर्घकालिक खतरे हैं, जिनमें भविष्य के प्रसव को प्रभावित करने वाली प्रसव दौरान होने वाली जटिलताओं से ले कर स्थायी रूप से अपंगता तक शामिल हैं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, किसी आबादी में सीजेरियन सेक्शन की 10% की औसत दर उपयुक्त मानी गई है। हाल में, डॉक्टरों से ले कर सरकारों तक ने इन ऑपरेशन से होने वाले प्रसव और जच्चा व बच्चे के स्वास्थ्य पर इसके प्रभाव को ले कर चिंता जताई है। इसके साथ ही 1985 में तय की गई 10% की अनुशंसित दर को ले कर लोक स्वास्थ्य में सक्रिय लोगों और अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने गंभीरता से समीक्षा की जरूरत बताई है। इसकी वजह यह है कि जिन महिलाओं को इस ऑपरेशन की जरूरत के लक्षण नहीं हों, उनको ऐसे ऑपरेशन से कोई लाभ होने का कोई साक्ष्य नहीं मिला है। जबकि इस ऑपरेशन में काफी खर्च आता है और निजी स्वास्थ्य सेवाओं की ओर से अक्सर ऐसे मामलों में भी इस पर जोर दिया जाता है, जहां इसकी जरूरत नहीं होती है। कई मामलों में माताएं किसी खास समय को पवित्र मान कर उसी समय प्रसव करने के लिए यह ऑपरेशन खुद ही करवाना चाहती हैं।

प्रसव के लिए ऑपरेशन का प्रतिशत



एनएफएचएस- 4 (2015-16) के कुछ प्रमुख तथ्य:

- 2015-16 के एनएफएचएस में पाया गया कि इस सर्वे के पांच वर्ष पहले की अवधि के दौरान 17 प्रतिशत जीवित प्रसव ऑपरेशन के माध्यम से हुए।
- 45 प्रतिशत मामलों में प्रसव के ऑपरेशन का निर्णय प्रसव का दर्द शुरू होने के बाद किया गया, जबकि 55 प्रतिशत मामलों में यह प्रसव दर्द शुरू होने से पहले तय कर लिया गया था।
- निजी क्षेत्र की स्वास्थ्य सेवाओं में प्रसव के लिए ऑपरेशन (41%) बहुत सामान्य हैं, यह 2005-06 के 28 प्रतिशत से काफी बढ़ गए हैं।

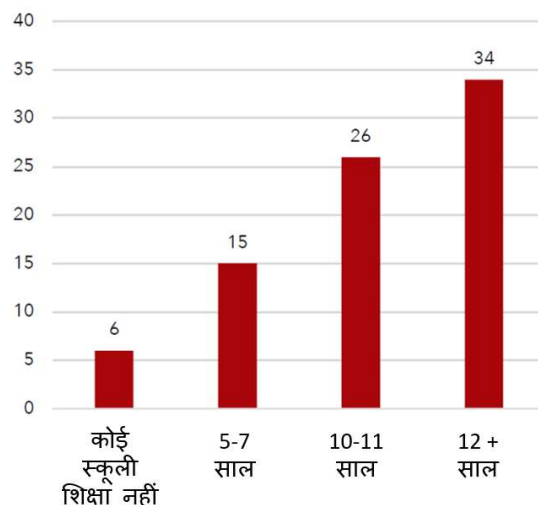
वर्ष 2005-06 (एनएफएचएस-3) से वर्ष 2015-16 (एनएफएचएस-4) के दौरान ऑपरेशन से होने वाले प्रसव लगभग दुगुने हो गए। पहले यह 9% थे जो बढ़ कर 17% पाए गए। आंकड़े बताते हैं कि पहली बार होने वाले प्रसव में ऑपरेशन (24%) दूसरी बार के प्रसव (2% से 16% के बीच) के मुकाबले ज्यादा होते हैं। 2005-06 के दौरान हुए एनएफएचएस-3 में निजी स्वास्थ्य सेवाओं में होने वाले ऑपरेशन 28% थे, जो 2015-16 के बीच हुए एनएफएचएस-4 के दौरान काफी बढ़ गए और यह कुल प्रसव का 41% हो गए।

शहरी क्षेत्र (28%) में ऑपरेशन से होने वाले प्रसव की दर ग्रामीण क्षेत्र (13%) के मुकाबले लगभग दुगुनी है।

प्रसव के ऑपरेशन की दर महिलाओं में शिक्षा के स्तर से बहुत अधिक जुड़ी हुई पाई गई। 12+ वर्ष की शिक्षा वाली महिलाओं में 34% प्रसव सीजेरियन हुए। जबकि 10 से 11 साल की शिक्षा वाली महिलाओं में यह औसत 26% था, 5 से 7 वर्ष की शिक्षा वाली महिलाओं में यह 15% था और जो महिलाएं कभी स्कूल नहीं गईं, उनमें यह महज 6% था।

समृद्ध महिलाओं के प्रसव में भी सीजेरियन की संभावना ज्यादा रहती है, जिसका कारण लागत या संसाधन संबंधित कारकों को माना जा सकता है। संपन्नता और निजी स्वास्थ्य सेवाओं में प्रसव के बीच भी संबंध है। 20% सर्वाधिक समृद्ध घरों की माताओं में (36%) प्रसव के लिए ऑपरेशन सर्वाधिक गरीब 20% आबादी की महिलाओं (4%) के मुकाबले काफी अधिक हैं।

शिक्षा के स्तर के अनुरूप प्रसव के ऑपरेशन की दर



इससे आपके काम में क्या मदद मिल सकती है?

हाल की एक अर्जी में भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय से अनुरोध किया गया है कि सभी अस्पतालों में सामान्य और ऑपरेशन से होने वाले प्रसव के आंकड़े प्रदर्शित किया जाना अनिवार्य किया जाए। इसके पीछे सोच यह है कि स्वास्थ्य सेवा प्रदाता और मरीज के बीच सूचना को ले कर जैसा असंतुलन मौजूद रहता है, उसे प्रसव के लिए होने वाले ऑपरेशन की दर के बारे में जानकारी उपलब्ध करवा कर कम किया जा सके। एक पत्रकार के तौर पर आप स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर सीजेरियन सेक्शन की दर को प्रभावित करने वाले कारकों जैसे कि सरकारी और निजी अस्पतालों में संसाधनों और उपकरणों की गुणवत्ता और आपूर्ति, सामाजिक-सांस्कृतिक सोच, गर्भावस्था के दौरान पैदा होने वाली जटिलताओं की दर, मुनाफे से संचालित इरादे और जननी सुरक्षा योजना (जेएसवाई) जैसी योजनाओं से इसका संबंध आदि को खंगाल सकते हैं।

रेफरेन्स:

इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पोपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) और आईसीएफ. 2017. नेशनल फैमली हेल्थ सर्वे (एनएफएचएस-4), 2015-16: भारत। मुंबई: आईआईपीएस

प्रोजेक्ट 'संचार' का लक्ष्य लोक स्वास्थ्य के क्षेत्र में संचार के लिए साक्ष्य का उपयोग करने की क्षमता तैयार करना और इसे संबंधित लोगों की आदत में शामिल करवाना है। इसके लिए 'संचार' वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित स्रोतों से प्राप्त राष्ट्रीय स्तर के आंकड़ों को आंकता है और उन्हें आसानी से समझ आने लायक स्वरूप में उपलब्ध करवाता है। साथ ही डाउनलोड कर आसानी से उपयोग की जा सकने वाली सहयोगी दृश्य सामग्री भी उपलब्ध करवाता है।



HARVARD
T.H. CHAN

SCHOOL OF PUBLIC HEALTH
India Research Center